आखर हिंदी पत्रिका e-ISSN-2583-0597 खंड 3/अंक 1/जनवरी 2023
Received: 20/01/2023; Published: 31/01/2023

नाटक

तबाही

प्रो. प्रतिभा मुदलियार

मूल: डॉ. डी. एस. चौगुले (कन्नड़)

अंक - एक

दृश्य-१

(धीमी रोशनी। एक सर्कल। रात का समय। ज़ोर ज़ोर से नारे लगाते हुए कुछ लोग रंगमंच पर प्रवेश करते हैं... " पेड़ लगाओं, पेड़ बचाओ..."। "भू-माफिया मुर्दाबाद... किसान की ज़मीन किसान की जान....।" आदि। फलक लेकर और नारे लगाते हुए कुछ स्वयं घोषित आंदोलनकारी तो कुछ दबाव के कारण आए लोग। तभी दो चार लोग एक आदमी को पकडकर ले आते हैं। उसके कंधे पर एक थैली लटक रही है। "पकडो, पकडो साले को... पकडो रे...बोसडी के को... हरामी साला.. पकडो...." वह आदमी इस विंग से उस विंग तक दौडता है। उस पकडने के लिए दो तीन लोग उसके पीछे दौडते हैं.... वह आदमी उनकी पकड़ से छूट जाता है। उसके हाथ न लगने के कारण वे लोग निराश होकर वहाँ से निकल जाते हैं... और घोषणा देनेवाले भी एक एक कर वहाँ से निकल जाते हैं।.... अंधेरा)

(प्रकाश)... (जो आदमी उनकी पकड़ से छूट गया था वह उस सर्कल के गांधी जी के पुतले के नीचेवाले चबूतरे पर बैठकर लंबी लंबी सांसे लेने लगता है। माथे का पसीना पोंछता है। उसकी आयु चालीस के करीब। हड़बड़ाया हुआ। वह नाटक का निवेदक है। बैठी जगह से ही वह चारों ओर अपनी नज़रें दौडता है। जगह जगह पर राजनीतिक फ्लैक्स लगे हुए हैं। उस पर उनकी प्रशंसा में लिखे वाक्य हैं। उसके नीचे उनके चेलों के चित्र। निवेदक ठगा सा देखता रहता है।)

निवेदक - (आसपास देखते हुए) गए, भाग गए.... नहीं तो इस भरी सड़क पर ही मुझे टपका देते। किसी का भला करने के दिन ही नहीं रहे। उल्टा हम पर ही चढते हैं। कहते हैं ना जिसका करें भला वो बोले मेरा ही खरा.... लोगों का भला करने जाय तो इनके पेट में दरद उठता है। पर मैं चुप रहनेवालों में से नहीं हूँ। मेरे पास इनका सारा कच्चा चिट्ठा है। हाँ। (थोडा रुककर) जेल से फरार

कैदी के पीछे लगते हैं वैसे मेरे पीछे पडे हैं ये लोग।! अगर वो नारेबाज़ी करनेवाले नहीं होते तो आज़ उन्होंने मेरा कचमुर निकाला होता। (दर्शकों की ओर देखकर) और आप.. आप तो मज़े ले रहे हैं... है ना?

(थोडा विश्राम। चारों ओर नीरवता। अपना चेहरा पोंछ लेता है।)

(आसपास देखते हुए)

वाह! वाह! विधायक जी। सांसद जी। चोर, साले देखों कैसे खडे है मस्त! क्या रुबाब है। वाह वाह... फ्लैक्स में एकदम भारी लग रहे हैं जी आप। (फ्लैक्स को निरखते हुए) पर यह भजनी मंडली... आई मीन... नेता लोगों का ढोल पीटनेवाली यह कंपनी यहाँ जच नहीं रही। खैर..छोडो, जाने दो। देखो। एक लाईन में ही इनके स्वार्थी चेहरे रावण के मुख जैसे दीख रहे हैं। है न? (थोडी देर रुककर) ये भी तो एक धंदा है।

सभी एक ही थैली के चट्टे बट्टे। ये संघ चाहिए। वो दल चाहिए। ये पार्टी नहीं वो पार्टी नहीं। राइट, लेफ्ट, मीडल। इटस् ऑल एकस्ट्रीम। गरीब निराधरों के बारे में कुछ कहा जाय तो नक्सेलाइट का लेबल लगाते हैं और फिर हड्डी पसलि एक कर अंदर डालते हैं। नहीं तो, देशद्रोही कहकर केस चलाते हैं। ब्लडी ऑल पॉलिसीज आर पैरलाइज्ड।

(कुछ क्षण विश्राम। वह बापू के अर्थात गांधी जी के पुतले के इर्द गिर्द घुमता है। एकदम रुक जाता है। गांधी की लाठी को टकटकी बांधे देखता है। गांधी के सामने विनम्रता से पेश आते हुए उनकी लाठी को स्पर्श करता है।)

इस लाठी ने अंग्रेजों की नाक में दम कर दिया था। किंतु अपनों को दण्ड देने की शक्ति इस लाठी में नहीं रही... हा.. हा... हा.. (उपहास से हंसते हुए.... परे हटकर नीचे बैठता है) बापू... इन सबके बीच तुम कैसे रह लेते हो.. हां.. यहाँ तुम्हारा दम नहीं घुटता?...तुमको नहीं लगता कि इन्होंने तुम्हारे चलाए आंदोलन का सत्यानाश कर दिया?...(उठकर थोडी दूर चलकर जाता है।) तुमसे इनका ढोंग देखा नहीं जाता इसलिए अपनी आँखें बंदकर ध्यानमग्न बैठे हो.. बैठो! तुम्हारे शांत स्वभाव को मेरा सलाम! पर...तुम ऐसे ही आँखें बंदकर बैठे रहो.. यही तो सोचते हैं ये लोग। इनको अपने फायदे के लिए 'बापू' चाहिए।बस। ऐसा कर के ही इन्होंने अपने देश का बेडा गरक किया है। तुम एक बार... बस एकबार अपनी आँखें खोलो.. खोलो अपनी आँखें, जैसे शिवजी ने अपनी तीसरी आँख खोली थी...आज वैसे ही प्रलय की ज़रूरत है। सारी बुराई जलकर राख होनी चाहिए। खाक होनी चाहिए।

(तडप कर)

बापू... मेरी सांस क्यों घुट रही है?... चक्कर सा आने लगा है... यही लेटता हूँ.. तुम्हारी छाया में....थोडा धीरज मिलेगा...।

(पीछे से गीत सुनाई लगता है)

निवेदक धीरे से चबुतरे पर लेट जाता है। धीमी रौशनी। स्तब्ध वातावरण। शीतिल हवा बहती है। बीजली चमकती है। थोडा प्रकाश होता है। फ्लैक्स हिलने लगता है। फ्लैक्स में खडे विधायक, सांसद अपने चेलों के साथ जीवित होकर नीचे उतरने लगते हैं और निवेदक के इर्द गिर्द खड़े होते हैं। दूर से कुत्तों के भौंकने की आवज़ आती है।)

विधायक : मैंने सुना, ये बापू के साथ कुछ बातें कर रहा था।

सांसद : मुझे भी कुछ ऐसा ही लगा। (अपने अनुयायियों की ओर देखते हुए) आपको क्या लगा?

विधायक : वही, जो आपको लगा।

चेला-1 : (तुंरत) हमें भी वही लगा।

विधायक : मैंने सुना कि ये बापू से साथ कुछ बात कर रहा था, आपने भी सुना?

सांसद : जी। मुझे भी सुनायी दिया। (चेलों की ओर देखकर) आपको?

चेला 1 : जी, जी सुनायी दिया।

चेला 2 : लगता है , ये बहुत खतरनाक आदमी है। बोल रहा था हम सबका कच्चा चिट्ठा इसके पास है। ... और साब.... ये कहीं हमारे आर.टी.आर. का कार्यकर्ता तो नहीं?.. देख लो साब... पूछताछ कर लो।

चेला 3 : उससे वह हमें ब्लैक मेल कर सकता है।

चेला 2 : वह हम सबको तलवे चाटनेवाला, ढोल बजानेवाला कह रहा था। हां, रावण भी कह रहा था।

विधायक : वो जो कुछ बोल रहा था उसे देखकर लगता है कि यह कोई और ही है... नहीं?

सांसद : यह हमारी व्यवस्था का स्वार्थी आदमी तो लगता नहीं। लगता है इसे अभी दूराशा का वायरस लगा नहीं है। यह तो तय बात है कि यह पक्का चापलुस नहीं है।

चेला 3 : मतलब?

सांसद : (गुस्से से) ये भोसडी के.. मतलब.. मतलब क्या... सालों खा पीकर... सत्यानाश...चीकन मटन खाकर तेरा दिमाग पायखाना बन गया है। शराब और शबाब ने तेरी मति मार दी है।

विधायक : इस आदमी को ऐसा नहीं छोड सकते। अब आप ही कोई उपाय बताए।

सांसद : (चेलों की ओर ईशारा करते हुए) इन सांडों को काम पर लगाइए। (निवेदक की ओर निर्देश करते हुए) इन जैसों को अपनी तरफ कर लेना बहत जरूरी है। ये तुम्हारे चेले यानी काम के न काज के दुश्मन अनाज के! चापलुसी करना तो जैसे इनको पता ही नहीं।

चेला 1 : साब, ये नक्सलवादी लगता है।

चेला 2 : नहीं, नहीं, ये बायां या दायां होगा।

चेला 4 : ये पगलेट, बायां नहीं बायें दल का बोल। लालफीताशाही मालूम है ना? ..हां...गरीब, दीन, दलितों के लिए आंदोलन करनेवाला है ये।

सांसद : बस करो। नालायकों। सालों, जो बोला है बस उतना करो। फट्टू साले।

चेला 4 : क्षमा साब।

चेला3 : अब क्या करना है बोलो साब?

सांसद : उठाओ इसे। (चेला -1 को) जा रे तू... जा, बोरा लेकर आ। चल जा। (वह जाता है।)

विधायक : अरे अरे पहले देखो मीडियावालों ने कही हिडन कैमेरा तो नहीं लगाया है?

सांसद : यही, बस यही करके आप पीछे रह जाते हैं। पहले थोडी हिम्मत करना सीखिए। बाद में जो होगा सो होगा। देखा जाएगा।

(चेला बोरा लेकर आता है।)

सांसद : पहले उसके मूँह में कपडा ठूँस दो, उसका मूँह बंद करों और फिर हाथ पैर बांध लो।

(चेला निवेदक को पकडता है। एक चेला उसका मूँह बंद करने की कोशिश करता है। अचानक हुए हमले से निवेदक हडबडाता है। संभलने की कोशिश करता है। प्रतिकार करने का प्रयत्न करता है। चेले अपना काम जारी रखते हैं।

निवेदक : अय, अय... कौन... कौन हैं आप.... अरे, अरे क्या कर रहे हो.... छोडो.. छोडो मुझे... मैं कह रहा हूँ.....छोडो.. छोडो मुझे..।

चेला 1 : मूँह बंद कर अपना। नहीं तो लातों से पीटोगे। चलो .. उठाओ इसे....।

(उठाकर ले जाते हैं।)

निवेदक : (मूँह बंद है फिर भी आवाज आती है।) अरे अरे कहाँ... कहाँ ले जा रहे हो मुझे.. छोडो... छोडो... अरे.. बचाओ... बचाओ... हेल्प... छोडो.. तुम्हारे हाथ जोडता हूँ...पैर पकडता हूँ.....।

(अंधेरा। थोडी देर बाद रंगमंच पर प्रकाश। नीरव शांतता। कोई नहीं है। होर्डिंग लेकर आए सारे गायब है। फ्लैक्स से नीचे उतर आए सभी अपनी अपनी जगह पर गए है। निवेदक डर से कांपते हुए तटस्थ सा बापू के पुतले को टकटकी लगाकर देखता है। धीरे धीरे उसका चेहरा खिल जाता है।

दृश्य -२

(वह स्थान जहाँ तीन सडकें मिली हैं। वहाँ एक वृत्त है। निवेदक समाचार पत्र पढ़ रहा है। दूसरे विंग से एक वारकरी आता है। शरीर पर मटमैला पतला सा शर्ट। सफेद पायजामा और सर पर गांधी टोपी, गले में तुलसी की माला। भाल पर अष्टगंध का टीका और भस्म। निवेदक के पीछे आता है।)

वारकरी : भाईसाब, भाई साब...

(निवेदक अखबार पढ़ने में तल्लीन)

भाईसाहब.... बेडगनहल्ली को कैसे जाया जा सकते है? मैं बहुत साल पहले आया था, अब समझ में नहीं आ रहा कि कैसे जाये।

(निवेदक उसकी ओर क्या है के भाव से देखता है।)

वही वही.... बरसात में बाढ़ के कारण जिसका बहुत नुकसान हुआ था, वही गांव।

निवेदक : (उसकी ओर मुडकर) वहाँ क्या काम है? (फिर अखबार पढ़ता है।)

वारकरी : रिश्तेदारों से मिलने आया हूँ। (थोडा रुककर) वही.. वही पेपर में भी आया होगा न।

निवेदक : हाँ.. आया है... किस गांव के हो?

वारकी : महाराष्ट्र में सांगली के पास एक छोटा सा है, खानापुर।

निवेदक : (पेपर एक ओर रखकर, जेब से सिगरेट निकाल कर जलाता है) इधर किसलिए आया है?

वारकरी : जी वो बेडगिनहल्ली में रिश्तेदार है।

निवेदक : कौन रिश्तेदार?

वारकरी : बापूसाहेब खटपटे। उनका सारा जीवन इसी खटपट में गया है।

निवेदक : पर, इधर, क्यानाल कात्री के पास क्यों उतरे हो भाई? सीधे गांव ही चले जाते।

वारकरी : मेरी कुछ समझ में नहीं आया भाईसाहब। वो कुछ बता रहे थे गांव के पास कोई फैक्टरी लगनेवाली है। उसके लिए काम चल रहा है... बोल रहे थे।

निवेदक : अच्छा... वो...।

वारकरी : हां... जी... बोल रहे थे, फैक्टरी के विरोध में हडताल चल रही हैं। कंडक्टर बोल रहा था। उसके कारण इधर कात्री में ही उतार कर बस चली गयी।

निवेदक : सुन, ये जो सीधी सडक जाती है न वैसे सीधा चलता जा, गांव के पास पहँचते ही एक तालाब मिलेगा। वहाँ किसी से पूछ लेना। (जाने लगता है।)

वारकरी :(हडबडी से) साब, दूर से आया हूँ.... चायपानी को बीसेक रूपया हो तो दो माईबाप.. विठोबा आपका भला करेगा।

निवेदक : (मुडकर) नहीं... तू तो वारकरी है.. है न... खुद को विट्ठल का भक्त मानता है, गले में तुलसी की माला भी है... और थोडी बहुत ज़मीन भी होगी...

वारकरी : हां है... झुठ काहे बोले।..

निवेदक : फिर...?

वारकरी : साब... भूखे पेट के सामने कौन विट्ठल? कहते है न, भूखे पेट भजन ना होई गोपाला। साहब... मैं वारकरी हूँ, माला जपता हूँ... विट्ठल का भगत हूँ... सब सही है... लेकिन हमारी तरफ बहुत खराब स्थिति है जी... बहुत बडा अकाल पड़ा है....इन्सान को खाने को अनाज का दाना तक नहीं मिल रहा...जनावरों को चारा नहीं मिल रहा... हमारी कोई मदद करे ऐसा कोई महान आदमी भी नहीं...गरीब किसानों की जान....(तडपता है).. जाने दो....उस विट्ठल के मन में जो होगा सो होगा....चलता हूँ साब..(जाने लगता है।)

निवेदक : अरे, रुक रुक। मेरी बात का बुरा मत मान।(जेब से पैसे निकालकर देता है).. ये ले..।

वारकरी : (पैसे लेते हुए) लेते हुए शरम आती है साब... पर... (निवेदक उसे बीच में ही रोकता है)

निवेदक : अरे ले रे.... शरम मत कर। (वारकरी पैसे लेता है।)

वारकरी : भगवान आपका भला करे। राम राम साब। (नमस्कार करते निकल जाता है।)

(निवेदक रंगमंच के मध्यभाग में आता है। उसपर प्रकाश।)

निवेदक : एक ओर अकाल, दूसरी तरफ मुसलाधार बारीश..दोनों की अति....एक ओर पसीने से पक जाना और दूसरी ओर बारिश में भीग जाना।

ये वारकरी जिस जगह से आया है वहाँ परिस्थिति बहुत भयानक है। सबसे अधिक किसानों को जिसने निगल लिया वह है विदर्भ। हमारे कार्पोरेट जगत से आया यांत्रिक-जीवन का यह मृत्युपाश है... मृत्यु का जाल। ये यंत्र मनुष्य के जीवन को अप्राकृतिक बनाता है। विकृति के मार्ग पर ले जाता है। लाभखोरी, क्रूरता और हिंसा के नए रूप की विसंगति ने मनुष्य को गंदगी का कीडा बना दिया है। क्षुद्र गंदगी का कीडा।

दृश्य-३

(प्रकाश)

(निवेदक बाढवाले इलाके में आता है। कुछ लोग बीडी, चीलीम आदि पी रहे हैं... कुछ लोग पान सुपारी खाने में व्यस्त हैं, आसपास अतिवृष्टि के कारण हानिग्रस्त मकान हैं।)

(निवेदक के पीछे पीछे कुछ लोग आते हैं।)

निवेदक : (पीछे मुडकर) तुम..तुम लोग मेरे पीछे पीछे क्यों आ रहे है... क्यों?

(वे लोग उसे ही आँखें तरेरकर देखते हैं।)

आदनी-1 : हम नाहीं आ रहें तुम्हारी पीछे, आप ही हमारा पीछा कर रहे हैं।

आदमी-2 : हम भी तो देख रहे हैं।

निवेदक : नही, नहीं... मैं क्यों आपका पीछा करने लगा...तुम लोग ही तो मेरा पीछा कर रहे हो... दो तीन दिन हो गए.... मैं भी देख रहा हूँ.... परसों तो, पता नहीं भागने ही लगा... भागता ही चला गया... भागता रहा ... भागता रहा... उन हडतालियों की भीड में छिप गया... है कि नहीं?

आदमी-3 : क्या बोल रहे हो...तो क्या इससे बहुत बडी खबर हो जाती.. हो बोल न?

निवेदक : (घबराकर) नहीं... ऐसा कुछ नहीं....मुझे नहीं मालूम.....।

व्यक्ति-1 : वो हम नहीं थे.... हमारी तरह ही होंगे... शायद नहीं भी होंगे.....

निवेदक : नहीं नहीं.... तुम लोग झुठ बोल रहे हो....(थोडा सोचकर) उस रात जो मेरे पीछे लगे थे.... नहीं उस फ्लैक्स में से... नहीं... नहीं... वो तुम लोग नहीं... ओह डैम इट... कनफ्युज मत करो यार।

व्यक्ति-2 : वो कैसे? आपको कोई भ्रम हो गया है। हम आपको आज पहली बार मिल रहे हैं...।

व्यत्वि-3 : हमें तुम पर शक है... तुम कोई डिटेक्टिव भी हो सकते हो.... हां।

निवेदक : नहीं नहीं...ऐसा कुछ भी नहीं....मैं एक सामान्य आदमी हूँ....(थोडा सोचकर) कुछ भी कहो आप उस नेता के आदमी हैं... उस सर्कल में लटकने वाले फ्लैक्स के लोग... जी हां।

व्यक्ति-1 : (हँसते हुए) यह पागल हो गया है... इसे पागलखाने ले जाना चाहिए...।

व्यक्ति-2 : बाढ और बरसातसे हमारा घर बार बिखरगया है.. हम उसकी फिकर में है... और ये बाबा कहता है कि ये हम मिले हैं.. देखे हैं... कुछ भी बक रहा है।(हंसता है)

व्यक्ति 2 : वैसे हमारे कई रूप हैं.... जैसा तुम कह रहे हो... होंगे हमारे तरह कई... या हम उनके जैसे....।

व्यक्ति3 : तु चाहे जो समझ... हमें कोई फरक नहीं पडता।

व्यक्ति 4 : हम फोटुग्राफर की बाट जोह रहे हैं। घरबार का सत्यानश हुआ है... नुकसान आपुर्ति के लिए आवेदन देना है.... अरे वो देख रहे हो वहां... मकान गिर गए हैं न.... बरसात से...! वो देख लिया कि नहीं....।

निवेदक : हां...।

(तभी फोटोग्राफर आता है.. उनमें से दो चार लोगों को गिर गए मकानों के सामने खडा करके फोटो लेता है।)

व्यक्ति-1 : वो जो फोटो लिए गए मकान है ना....?

निवेदक : जी...

व्यक्ति-1 : वो किसके है पता है?

नवेदक : किसके? वो जिनको सामने खडे कराकर फोटो लिए गए... उनके.. और क्या।

व्यक्ति -1 : नहीं उनमें से किसी के भी नहीं।

निवेदक : क्या? फिर किसके हैं?

व्यक्ति-2 : ज़रा ऊधर देखो... वो उसे टीले पर कवेलेवाले... रंगरेज किए मकान...दिख रहे हैं... वे हमारे हैं।

निवेदक : (ताज्जुब होकर... धक्का लगकर) ये तो धोखा है... ऐसा नहीं करना चाहिए।

व्यक्ति-2 : (निवेदक पर ज़ोर जमाने हुए) ज्यादा होशियारी मत दिखा..हां.... आंदोलन... हडताल करनेवालों के पीछे गए तो.....(थोडी देर रुककर) ज्यादा डिटेल्स में नही जाना समझे....हां....(दूसरों को) चलो चलते हैं। (सभी जाने लगते हैं।

(उनमें से एक वापस आकर कहता है...) उस फ्लैक्स में से उतरकर आनेवाले हम है....अगोचर..गोचर.... हम गायब भी होते हैं.... (जाता है) (निवेदक मूँह खोलकर देखता रह जाता है।)

(प्रकाश। हानिग्रस्त भाग...चीलिम बीडी पानेवाले.. मूँह खोलकर खडे निवेदक के चारों ओर आकर जमा हो जाते हैं।)

निवेदक : (वारकरी को देखकर) अरे... तू यहाँ?

वारकरी : जी.... मैं यहीं आनेवाला था।

किसान : इन वारकरियों का कुछ पूछो मत..आज यहाँ तो कल वहाँ। ये खटपटे जी के पास आया है... आप इधर क्यों ऊँध रहे हैं...आप को देखकर ही हैं हम इधर आए हैं।

निवेदक : जी.... ऐसा कुछ नहीं....थोडा आलस..... (रुककर)...ये मिला था मुझे...इसलिए पुछा...

कामगार -1 : (वीडी पीते) ये... कमठे महाकाल का है..पंठरपुर महाराज का भगत... दिंडी से इधर से उधर और उधर से इधर करता रहता है... मगर बस पंढरपुर नहीं जाता है...।

निवेदक : और कहाँ कहाँ जाता है?

किसान-2 : नही... नहीं.. बस वही एक बात मत पूछो।

निवेदक : क्यों?

किसान-2 : (चीलीम भरते हुए....तिली जलाकर.. एक कश लेते हुए..धँआ छोडता है) हर साल धर्मस्थल. गोकर्ण को पैदल जाता है ये वारकरी।

(निवेदक वारकरी की ओर देखता है। वो दात निकालकर हंसता है।)

जहाँ भी जाए वहाँ मंदिर में वास करता है...गांववाले भी वारकरी आया है समझकर खिला देते हैं....कुछ लोग पैसा भी देते है....।

कामगार-3 : प्रवचन और भजन चलता रहता है... रात बीत गयी कि फिर दूसरे दिन दुसरे गांव.... बस..यही...।

निवेदक : ऐसा है तो एक भजन हो जाने दो...एक सैंपल....क्यों जी क्या कहते हैं?

किसान-2 : मेरे मुँह की बात छीन ली आपने साहेब।

वारकरी : एकदम भजन? (थोडा रुककर) आपकी इच्छा है तो.... कोशिश करता हूँ... एक तत्व पद गाता हूँ...लीजिए ..लीजिए ...मंजिरें, पखवाज लीजिए...(वारकरी तत्वपद गाने लगते हैं.....बाकी उनकी साथ देने लगते हैं।)

बिद्दिय बै मुदकी बिद्दिय बे

दिना होदकी बलु ज्वाकी (पद)

सद्य आगोदु हुलगूर्संती

गद्ललदाग यातक निंती

बिद्द गिद्दर निन्न येब्बिसुवत्तारिल्ल

बुद्धीगेडी मुदकी ज्वाकी।

निवेदक : सच में.... मन का तनाव कम हुआ...।

किसान 1 : बाढ, बारिश से जान ऊब जाय तो... यही सहारा है जी...ऊब मिटाने का...।

निवेदक : अरे तू तो महाराष्ट्र का पर कन्नड अच्छा गा लेता है....।

वारकरी : साब... कवठेमहाकाल के पास जत गाँव है न...?

निवेदक : अच्छा अच्छा... भूल गया मैं.... तेरे तत्वपद में मैं इतना लीन हो गया कि...

किसान - 1 : एक मज़ेदार बात मालूम है....?

निवेदक : कौनसी?

किसान-2 : तू बता..।

कामगार : अरे छोड... तू अच्छे से बताता है.... मैं कैसे बताऊँ?

किसान-2 : ठीक है। वो यानी.... ईधर गोवावाले महदाई को लेकर शिकायत कर रहे हैं.. भाषा को लेकर लडनेवाले कम नहीं है... अब उत्तर कर्नाटक भी एक अलग राज्य बने...ऐसा कहनेवाले नेतागण भी हैं... ये तो तुम्हें पता ही होगा न...(चिलीम का कश लेते हुए) इसकी जडें... मतलब..उत्तर कर्नाटक अलग होना चाहिए इसके पीछे की कथा... इस वारकरी ने बतायी...।

निवेदक : अच्छा... ऐसा है.... मैं कुछ अलग ही समझ रहा था....।

वारकरी : भाईसाहब, उसकी क्या सुन रहे हैं आप... वह कुछ भी बकता है...।

कामगार-2 : अरे उसमें शरमाने की क्या बात है... बताओ न..।

किसान-1 : ये चार पाँच गाँव घूमनेवाला पंढरपुर का वारकरी...सीधा सादा आदमी नहीं है... समझे..।

वारकरी : ठीक है... मैंने जो अपने कान से सुना है वही बताता हूँ.. सच या झूठ पता नहीं...हां..।

किसान-2 : तो बता न..।

वारकरी : हमारा एक बडा नेता, राष्ट्रीय प्रजा-पक्ष का अध्यक्ष शामराव कदम अक्सर आपके पास आता रहता हैं... देखा जाए तो वे पहले भाषा की राजनीति करते थे... पर केंद्र में जाने से वह अब छोड दिया है... वे आपके इधर के नेताओं के कान में कह रह थे...।

कामगार-1 : क्या..क्या कह रहे थे?

वारकरी : अरे थोडा रुक न... वही तो बता रहा हूँ न... (थोडा रुककर) म..म..महदाई की समस्या हल होना है तो गोवा... और भाषा की राजनीति रोकना हो तो गोवा के साथ दक्षिण महाराष्ट्र और उत्तर कर्नाटक को एक करके उत्तर कर्नाटक स्वतंत्र राज्य होने दे...ऐसी सलाह दी है...यहाँ के नेता शामराव कदम के खास शिष्य है..फिर क्या है.. उत्तर कर्नाटक स्वतंत्र राज्य बने... इसलिए चिल्लाना भी शुरु किया है उन्होंने... बस।

सभी : अररर.. बडा लफडा है जी...।

कामगार-3 : क्या दिमाग पाया है...।

निवेदक : (उठकर वारकरी के पास जाते हुए) शाब्बास.. मैंने कुछ और ही समझा था... क्या पते की बात बतायी है.... पर कोई स्वतंत्र राज्य बननेवाला नहीं है...।

कामगार-1 : एकदम सही बोले... पर ये वारकरी बहुत पहुँची हुई चीज है...हां..।

वारकरी : चार गाँव का पानी पिया है मैंने..(हँसता है।)

किसान : (मज़ाक में) इसे ऐसा ही छोड दिया तो.... राज्य तोडकर उसके टुकडे टुकडे करेगा... (हँसता है... सभी हँसते हैं। अंधकार)

दृश्य-४

(प्रकाश)

(भरमू का घर। आयु चालीस के आसपास। पगलेट सा। उसकी पत्नी शांति। उससे एक दो साल छोटी। वह कुछ हिसाब करते बैठा है। निम्न मध्यवर्गियों सा दीखाई देनेवाल उसका मकान। शांति पढी लिखी है। थोडी दिमाखवाली है। किसी गैरसरकारी संस्था में काम करती है। भरमू सहकारी कृषि संस्था अर्थात ग्राम विकास सोसाइटी में क्लर्क है।)

शांति : हिसाब का काम निपटा कि नहीं। मना करने से भी क्या आप मानोगे ।

(भरमू वैसे ही अपने काम में व्यस्त।) आपको कितना भी गला फाडकर कहे कि अपने उस दोस्त की बात मत मानो... पर आप मेरी थोडी ही सुनते हैं...

भरमू : (काम करते करते चाय की घूँट लेते हुए) क्या है? उसी से ही तो पैसा आएगा।.. इतनी हडबडी क्यों भला.... ?

शांति : (गुस्से से) हां.... पैसा आता है... देखते रहो... थोडा भी सोच समझकर काम करनेवाले इन्सान नहीं हैं आप.... किसी ने कुछ कहा और बस होगया.... इतना पैसा आता है... उतना पैसा आता है... कहते ही आ रहे हैं... देखते हैं कितना आता है....।

भरमू : (कलम एक ओर रखकर। आज हमारी सोसाइटी के चेअरमन लेते हैं ऐसा कहा है... उनका हो गया तो अच्छा है... चेन आगे चलती रहेंगी ...।

शांति : ऐसा नहीं जी... उनको इसमें आने की जरुरत ही क्या है....?

भरमू : क्यों नहीं आएंगे... उनके तो कई सारे कॉन्टक्ट हैं।

शांति : आप बस सपने ही देखते हैं.... हर वक्त भ्रम में रहते हैं.... आपका नाम भरमू न होकर भरम होना चाहिए ...।

भरमू : अरी शांति... वह गद्दा लेने के लिए कैसे कैसे लोग पीछे पडते हैं पता है तुम्हें.... उस गद्दे पर सोने के बाद कैसे कैसे रोग ठीक हो जाते हैं... उसमें मैग्नेट होता है.... उस गद्दे के बारे में बोलते समय एक साठ साल का आदमी उठकर मीटिंग में बोला कि, मेरा अनुभव सुनिए... मेरा अंड सूज गया था..... पैंट तक पहनने नहीं आ रही थी... चोर दिन उस गद्दे पर सोया और सब ठीक हो गया....(कहते कहते हंसता है) उस बुढेकी बाते सुनकर सभी हंसते हैं।)

शांति : यही..यही... आप चार दोस्तों के नाम बताते है.. बस और क्या..... धरती का अपना गुरत्वाकर्षण है तो फिर मैग्नेट बेड की क्या जरूरत ...?

भरमू : ऐसा नहीं है... सुनो.... अरे इसमें ... इरिगेशन डिपार्टमेंट के अधिकारी, डी. वाय एस पी, डी. सी. आदि लोग भी उसमें हैं.... हो कहाँ तुम ...? (चाय पीकर कप नीचे रखता है।)

शांति : अरे मैं यही हूँ.... वास्तव में....हकीकत में.... भ्रम में नहीं हूँ....(बडबडाती) शादी को इतने साल हो गए.... सारी जिंदगी खपने में ही गई.. नाम भी अच्छा ही रखा है आपका... भरमू---भ्रम।और खटपटे.. खटपट करते रहिए... और क्या..।

भरमू : (गुस्से से) जबतक इतना सारा नहीं बोलती तबतक तुम्हें खाना हज़म नहीं होता क्या?

शांति : तो फिर आपको कर्जा लेने किसने कहा था...हां ?

भरमू : अगर वह स्कीम सक्सेस हो गयी तो... लाखों... लाखों...

शांति : तबतक तो ... जो कर्जा लिया है न वह पहाड सा हो जाएगा... लाखों लाखों...(थोडा रुककर, इधर उधर देखते हुए) आप अगर नाराज़ ना हो तो एक बात पुछूँ?

भरमू : हाँ... पूछो...।

शांति : पापा जी की जिद के कारण खेती का बंटवारा नहीं हो रहा है....

भरमू : अरे वे खेती नहीं बेचेंगे.. छोड दो वह बात...

शांति : विधायक जी थोडे न छोडंगे... और तो और सरकार ने ही कंपनी को दिया है न?

भरमू : अरी, हडताल अभी कहाँ खतम हुई है ?

शांति : देखिए.... हमारे खेत के आसपास के सारे खेत बिक गए है... आप किसी से कहकर देखिए तो .. यदि वह जमीन बिक जाए तो करोडों आएंगे करोंडो... हां... आराम से जीवन बीता सकते हैं...(उपहास से) फिर उस गद्दे की स्कीम काहे के लिए.... और आप भी कर्जे में डूब रहे हैं...।

भरमू : (हिसाब का बही खाता हटाकर एक ओर रखते हुए) तुम जो कह रही हो वह भी सच है.... इसके लिए रियल इस्टेट का एजेंट मुझे मिलने बुला रहा है। किंतु हमारी माता जी के लिए वह ज़मीन जान से भी ज्यादा प्रिय है.... उनसे पूछे भी तो कैसे....?

शांति : अजी... सिर सलामत तो पगडी पचास.... पहले आप उस सुद के चंगुल से बाहर आइए...नहीं तो उस दलदल में घुटकर मर जाओगे... पक्का.... हां..।

भरमू : देखते हैं.... (उठता है) मैं हो आता हूँ... आने में शायद देर हो जाए.... (चला जाता है... वह हिंसाब का वही खाता उठाकर रखते समय सपने में मगन होता है... अंधेरा)

दृश्य- ५

(रौशनी। होटल में स्थित एक बार। लोगों का आना जाना कम हुआ है। उसके सामने रियल इस्टेट का एजंट बैठा है। गिलास, सिगरेट आदि टेबल पर रखा गया है। किसी गजल के मंद स्वर सुनाई दे रहे हैं।)

एजंट : परसों तुमसे बात की थी। उसपर कुछ सोचा है कि नहीं? हमारे पास तो वक्त नहीं है। (एक घूँट लेता है।)

भरमू : (अपनी थोडी सी बढी हुई दाढी खुजाते हुए) मेरी एक बात समझ में नहीं आ रही... माता जी को एकदम से कैसे कहे.. कैसे समझाए... हिम्मत ही नहीं हो रही।

एजंट : अब खेत में काम करनेवाले मज़दूर भी कहाँ मिलते हैं.. बारिश भी तो कम होने लगी है... बस ..यही बता तो.. सिंपल...।

भरमू : इस खेत में उनकी जान बसती है।

एजंट : अरे... बताओ क्या शाश्वत है ...कुछ भी शाश्वत नहीं है... राजा लोगों के राजमहल ही ढह गए हैं..तो....।

भरमू : ऐसा नहीं जी ... माता जी थोडी भावुक है....।

एजंट : (सिगरेट जलाकर, एक कश लेकर धूँवा छोडते हुए) तुम विस्की, रम लेते नहीं हो क्या?

भरमू : जी नहीं... मुझे आदत नहीं है... आप लीजिए.... चाहे तो मैं ये खाता हूँ... (स्नेक्स उठाता है।)

एजंट : अरे ले ले... वह थोडे ही शो के लिए रखा है...(और एक घूँट लेता है) मेरी सुनो तो करोडोपति हो जाओगे... पक्का ! हां...जिसका मोह रखना चाहिए बस उसी का रखना चाहिए... (घात पडल्यावर शेत भांगलायच असतं ना) .. बस ये भी ऐसा ही है... अभी टाइम है... कभी कभी भावुकता, इमोशन आदि परे रखने होते है...हां।

भरमू : पर ये सब होगा कैसे?

एजंट : उसके लिए निर्दयी होना होता है... अगर ऐसा नहीं हो पाये तो सारा जन्म भटकन में ही जाता है... तुम इनवेस्ट करो... पैसा लगा दो...(घूँट लेता है)..।

भरमू : कहाँ?

एजंट : वो पहाडी पर की जमीन है न, वहाँ....। हाय वे की ओर पचास किलो मीटर की दूरी पर... कुछ राज नेता वह ज़मीन ले रहे है.... क्यों कि अब वे पैसे से पैसा कमाना जान गए हैं.... वो तुम्हारी तरह बेवकूफ नहीं है ... (सिगरेट बुझाता है।)

भरमू : मैं तो हडबडा गया हूँ.... कुछ भी समझ में नहीं आ रहा है...।

एजंट : वो तो सोने का अंडा देनेवाली मुर्गी है....

भरमू : वो कैसे? मेरी समझ में आए ऐसा समझाओ न....।

एजंट : वैसे वो किसी की समझ में नहीं आएगी। पर एक बात पक्की है... कहीं भी ये बात लीक नहीं हुई है...पर सिर्फ मुझे मालूम है।

भरमू : यह भी कोई बताने की की बात है... और तो और वह आपको नहीं तो और किसकी समझ में आएगी?आप तो विधायक जी के खास आदमी है। आप बोले भी तो है कि ... आप मुझे अपने भाई की तरह मानते हैं।

एजंट : सही है। उस पहाडी ज़मीन में इनवेस्ट करो। भू-माता तुम्हारा साथ नहीं छोडेगी। एक एकड को अस्सी हजार मिलेंगे। मोस्ट चीप। एकदम सस्ती।

भरमू : क्या? उस पहाडी जमीन को अस्सी हजार। खरीदनेवालों को पागल कुत्ते ने काँटा है ऐसा बोल रहे हैं लोग।

एजंट : पागलपन के बिना धन कमाने नहीं आता यार। केवल सुनार को ही कांच और सुवर्ण की पहचान होती है। सभी सुनार नहीं हो सकते। मेरी सुनो। उस बंजर भूमी का सोना कर लो।

मेरी जानकारी के अनुसार छः महीने में उस पहाडी पर एक एम.एन.सी. खडी होनेवाली है। पक्की खबर है।

भरमू : अरे छोडिए साब... ऐसी कई अफवायें उठतीं है... उस क्वान्याल टीले पर मील होनेवाली है... इसकी खबर तो होगी ही न आपको?

एजंट : हाँ... पता है।

भरमू : उसका क्या हुआ? जब से मैंने होश संभाला है तब से सुन रहा हूँ... वर्तमान विधायक के दादा..बहुत ही अच्छे इन्सान... गांधीवादी थे...। उनके समय की बात है यह। यहाँ एक मील बने इसलिए उन्होंने लोगों से शेअर्स जमा किए थे।।... पैसा जमा भी हुआ.... तत्कालीन मुख्यमंत्री के द्वारा आधारशिला भी रखी गयी थी... पर आगे क्या हुआ? वह गांधीवादी नेता चल बसा... और उसके साथ गाँधीवाद भी चला गया। योजना फाइल में दबी पडी है और उस आधारशिला पर कुत्ते मुत रहे हैं। धूप और बारिश से आधारशिला का पत्थर घिस गया पर मील का सायरन कभी सुनाई नहीं पड़ा। सरकारी सोयाइटी जैसे डूबो देते हैं वैसे ही शेअर्स के पैसे भी निगल गए है.. ऐसा लोगबाग कहते हैं।

एजंट : (सिगरेट का कश लेता है... और सिगरेट की राख ऐश ट्रे में झाडता है।) तू अभी भी उस मील के काल में है... मुंबई की मिलें बंद पड रही हैं.. फिर क्वान्याळ टीले का क्या लेकर बैठा है...।

भरमू : फिर ?

एजंट : अभी जमाना एम. एन. सी. का है। बाजारवाद ने सारे संसार को निगल लिया है। सोच लो। मेरी जानकारी अभी कहीं भी लीक नहीं हुई है। और यदि लीक हो जाएगी तो नीजि साहुकारी का धंदा करनेवाले घराने ढह कर गिर जाएंगे। उनके पेट छोटे नहीं बडे हैं। गबागब खाते हैं। कितना भी खाया तो भी उनका पेट नहीं भरता। तुम ही सोच लो।

भरमू : पर उतना पैसा.... कठिन है।..

एजंट : तेरी तनख्वाह नही आती? सेवींग्ज नहीं है क्या? थोडा पैसा उठा लो..।

(भरमू गडबडा जाता है। वह सोचने लगता है। पर पैसों के जुगाड का मार्ग ही नहीं सुझता)

भरमू : आपका प्रपोजल वंडरफुल है... पर..।

एजंट : (और एक पेग तैयार करते हुए) फिर क्या मुहूर्त देखना है?

भरमू : रास्ता ही नहीं मिल रहा है।

एजंट : देखो भरमू... यह खबर साहब से मिली है..... तुम्हारे भले के लिए ही बता रहा हूँ.... मैग्नेट बेड के मामले में मैं तुम्हारी मदद की थी न?

(भरमू और अधिक हडबडा जाता है। भविष्य में कितना पैसा मिलेगा इसका गंभीरता से विचार करने लगता है)

अब मात्र अस्सी हज़ार। कल लाखों-करोंडो... किसे पता... कल शायद तुम करोडपति बन जाओ.....हम किस खेत की मुलि भाई.... ।

भरमू : आपको कैसे भुलेंगे साब। (थोडा सोचकर) मुझे कोई रास्ता बताइए न... मेरे पास कुछ पैसे हैं... थोडा कर्जा भी उठाने को भी तैयार हूँ...। (हाथ में गिलास लेकर एजंट खडा होता है। भरमू भी उसके साथ खडा होता है। दोनों रंगमंच के केन्द्र में आते हैं।)

एजंट : मेरे पास एक मस्त योजना है। सुनोगे?

भरमू : हां.. हां.. बताइए न...।

(भरमू की कान में कुछ बताता है। वह सुनकर वह दंग रह जाता है। पीछे हटता है।

न...न...न.... संभव नहीं... छोडिए.... कुछ करने जाए और कुछ का कुछ हो जाए... न... न... न..। संभव नहीं साहब।

एजंट : देखो... एक दो दिन लेकर सोच लो...शांति से सोचो... तुम खुद ही समझ जाओगे..... चलता हूँ। (गिलास और एक नोट रखता है) तुम्हें कहीं जाना हो तो रास्ते में छोड देता हूँ...।

भरमू : नहीं नहीं... मैं खुद चला जाता हूँ।

(भरमू की कान में एजंट के शब्द घुम रहे थे। उसका दिल जोर जोर से धडकने लगता है।) चला जाता है। अंधेरा।

(प्रकाश। एजंट विंग से रंगमंच पर आता है।)

एजंट : (मोबाइल पर किसी को क़ॉल करता है) साहब... पत्थर तो फेंका है.... आम तो गिरना ही चाहिए... हां... जी... रखता हूँ।) अंधेरा।

दृश्य- ६

(प्रकाश। बापूसाहब का घर। संध्या समय। बापूसाहेब ने धोती पहनी है और उपर बंडी पहनी है। पत्नी रुक्ख्वा अंदर खाना बना रही है। दोनों बातें कर रहे हैं कि तभी भरमू आता है।)

थोडी ही देर में वारकरी भी आता है।

बापुसाब : अरी क्या...? कहाँ हो? ज़रा इधर आना।

रुक्कव्वा : क्या है? चुल्हें पर दूध चढाया है। ऊबलकर बाहर गिर जाएगा। किस बात की इतनी जल्दी है?

बापुसाब : दूध का ऊबलकर गिर जाने जैसा शुभ कुछ नहीं है। यहाँ हमारे डूबने का वक्त आया है।.. (रुक्कव्वा हाथ पोंछते आती है)

रुक्कव्वा : सारे काम वैसे ही पडे हैं। क्या हुआ.. डूबने.. तैरने का क्या कह रहे हैं आप?

बापुसाब : (कागज़ दिखाते हुए) देखो..देखो ये नोटीस...कहते है कि यहाँ कोई कंपनी बननेवाली है... वहाँ उधर उसके खिलाफ आंदोलन और इधर यह नोटीस..।

रुक्कव्वा : उसमें क्या लिखा है वो तो बताओ...।

बापुसाब : जिसका डर था वही हो रहा है...।

रुक्कव्वा : ज़रा स्पष्ट बोलोगे...।

बापुसाब : हमको वह नीचेवाला कुँआ और...पहाड का खेत छोडने के लिए कह रहे हैं... एकदम अच्छा भाव देंगे ऐसा लिखा है.... आपके खेत के आसपास की सारी जमीन हमने ली है.. बस आपकी ही बची है.. उसको निपटाना है...।

रुक्कव्वा : वो हरामी.. लोगों की खेती यानी अपने बाप की जागीर समझ रखी है... अपने आंगन की तरकारी... जब चाहे तोड कर खा ले... (दुख से) पुरखों के समय से हमें पालनेवाली हमारी धरती माता.. भुख से तडपते पेट में दाना डालनेवाली... वही नहीं रही तो हम कैसे जीयेंग? माँ को बेचकर खाना है क्या? इतना ही नहीं... वहाँ उस कुएं की ओर हरेभरे पेंडों के नीचे हमारे पुरखों के मकबरे हैं.. और वह सब हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है... और ये आए हैं सब छिनने के लिए... वो कैसे छिन लेते है वही देखती हूँ मैं...(थोडा रुककर) तुम चुप मत रहना। इस सरकार के जो विधायक नहीं है उनके पास जाओ। उनको गरीबों के प्रति दया है। नहीं तो तुम पर उस मारनेवाले सांड के पास जाओगे... संभल कर.... और.. किसी अच्छे वकील के पास जाओ।

बापुसाब :कोर्ट कटहरी से हाथ पैर ही कांपने लगते हैं।

(तभी भरमू आता है। उसके दिमाग में एजंट और पत्नी की बातें घुम रही हैं।)

भरमू : किस विधायक के पास जा रहे हैं? वो कौन है जो गरीबों की चिंता करता है.. और वो...जो मारनेवाले सांड सा है?... (रुककर) और वकील.... (उपहास से हँसते हुए) सभी एक ही थैले के चट्टे बट्टे।

(बापू साहब गुस्से से)

बापूसाब : आईए भरमू जी... आईए..आईए... हम हर मुमकिन कोशिश कर यहाँ तक पहुँचे है....और तुम्हें मज़ाक सूझ रहा है.... वैसे भी तुम्हें सारा मज़ाक ही लगता है.... अपनी जोरु के साथ अलग रहनेवाला तू.. तुम्हें कौनसी खबरबात है?.... और ऊपर से बातें तो बडी बडी... इधर इस नोटीस से हमारे होश उड गए हैं और तू....।

भरमू : (बात बीच में ही रोकते हुए) मुझे सब पता है... और अच्छे से पता है...उसी के बारे में बोलने आया हूँ...।

बापूसाब : पता है न.... फिर क्या बोलोगे?

भरमू :नीचेवाला कुँए और खेती के बारे...(थोडा रुककर अपने मन की तैयारी करते हुए) मुझे लगता है कि उसे बेच देना ही बेहतर है.... और... (बापू साब उसकी बात को रोकते हुए)

बापूसाब : उसको बेच कर क्या एक दूसरे के बदन को नमक लगाकर चाटोगे और अपनी भूख मिटाओगे? होश में तो है तू? (रुक्कवा से) अरी ये.. सुना.. तुम्हारा लाडला क्या कह रहा है... खुद तो निर्वासित है... हमें भी सडक पर ला रहा है... कहते हैं ना छोटा भाई एक दुश्मन और अपना जाया दूसरा दुश्मन। घर और जमीन बेचने के लिए घर में ही दुश्मन पैदा हुए...।

रुक्कव्वा : सगा भाई दुश्मन नहीं है...पर घर में ही दो दो दुश्मन बैठे हैं...तलवार की धार तेज किए.....पैर का पत्थर बनकर... इसका वो बडा भाई हमें पराया कर अपनी जोरु के साथ चला गया.... गोरा गोरा पर दिल का काला.. दिखने में तो अच्छा खासा पर जिम्मेदारी से दूर.... वह अलग होकर इचकरंजी में रहता है... बडे शहर में.... माँ-बाप को पराया करनेवाला हरामी साला.... उसकी गांड धोकर, गू-मुत सब किया... पर माँ बाप का ऋण चुकाने का भी लायक नहीं है .... और अब आए हैं बडे घर दार बेचने...।

भरमू : (शांति से) तुम ये ऐसे अंगार उगलनेवाले हैं.. ये मुझे अच्छे से पता था। शांति से मेरी बात सुनो। एकदम से ज्लदी मत करो... जमीन बेचने का मुझे शौक नहीं है... पर परिस्थिति ही ऐसी है... हमारे शिव के पडोसी भीमाचाचा, रामुकाका, ताता जी... इन्होंने कब की अपनी जमीन बेच दी है और लाखों रुपए गिनकर लिए हैं। बस हमारी ही जमीन बीच में बच गयी है। सोच लो। अधिकारी लोग थोडे ही छोडेंगे। देख लो.. अधिकारियों और सरकार के सामने हम भला

किस खेत की मुलि? ठंडे दिमाग से सोचिए... सरकार और कंपनी के साथ हम जैसे थोडे ही लड सकते हैं....(थोडी देर रुककर गंभीर और सावधानी से) मेरे पास एक अच्छी योजना है.... सुनिए.. यहाँ से पचास किलोमीटर दूर, हाई वे के पास खाली पडी जमीन है... एक एकड को मात्र अस्सी हजार मिल रहे हैं। आगे वहाँ एमएनसी मतलब एक विदेशी कंपनी होनेवाली है। उस समय उस जमीन की कीमत सोने से भी अधिक होनेवाली है। लाखों करोंडो की कीमत....हां...। तब वह जमीन बेच देने की... केवल छः सात महीने में पैसा ही पैसा। (हौले से) मुझे एक खास आदमी ने यह जानकारी दी है।

बापूसाब : शेख महंमद की कथा बताने की तरह क्या बोल रहा है तू... किसी पागल ने तुम्हारी बात सुनी तो वह सच ही मान बैठेगा....पर तू मुझे पागल मत समझ... तुम्हारी बात पर विश्वास कर नीचे वाला खेत बेचने के लिए कह रहा है तू...? और वह बंजर पहाडी जमीन लेकर किसी कंपनी की राह ताकता रहूँ क्या?... अब आन पडी मुश्किल से बाहर कैसे निकल पडे इसकी मैं सोच रहा हूँ... उस के लिए कोई मदद करने की बजाय, अच्छी सलाह दे रहा है न तू... (उसकी ओर सरक कर) भरमू, तू तो कच्चे कान का... किसी के कुछ कहने कि फुरसत कि तुंरत भरोसा करने लगता है और शरीर में राक्षस चढ़ने की तरह नाचने लगता है और अपना नुकसान कर लेता है। तू इतना भी समझ नहीं पाता कि चुना मिलाया पानी कौनसा और दूध मिलाया पानी कौनसा..., इसलिए तू उस पहाडी जमीन के सपने देखना बंद कर।

भरमू : मुझे मालूम था कि मुझे ऐसा ही कुछ सुनने मिलगा। प्रवाह के साथ तैरना छोडकर विरुद्ध दिशा में तैरने से थक जाएंगे... हाथ पैरों से शक्ति निकल जाएगी...और डूब जाओगे और अपने साथ अपने साथ अपने बच्चों को भी डूबाओगे... पर मैं डूबने को तैयार नहीं... घर आयी लक्ष्मी को मैं ना नहीं कहुँगा।

(गुस्से में बापुसाब उस पर दौड पडते हैं।)

बापुसाब : हरामी, सत्यानाश करनेवाले हो सारा... हाथ में जो है उसको देकर कंगाल होना चाहता है क्या... इस ढलती उम्र में हमसे भीख मंगवाना चाहता है क्या तू.... (रुक्कवा बीच में आकर उसे संभालती है)

रुक्कव्वा : अजी आप थोडा धीर रखिए... अरे भरम्या... सोच न समझ जो मूँह में आये बक देता है...

(तभी दरवाज़ा खटकाने की आवाज़। सभी एक दूसरे की ओर देखते

हैं।)

कौन होगा?

बापूसाब : देखो कौन है.... (रुक्कव्वा जाकर दरवाज़ा खोलती है। वारकरी अंदर आता है।)

रुक्कव्वा : आ जा आ जा.... कैसे आना हुआ?

बापूसाब : अच्छा हुआ आ गए तुम....। बिलकुल भगवान विट्ठल का आना हुआ...जी..।

वारकरी : अरे.. मैं बापूसाब के घर आया हूँ... (बापूसाब, भरमू.. रुक्कव्वा खुद को संभालते हैं। रुक्कव्वा अंदर चली जाती है।)

बापूसाब : बापू साब के घर ही आए हैं आप... अचानक आना हुआ?

वारकरी : इस तरफ भारी बरसात से बाढ़ आयी है.. बहुत नुकसान हुआ है... यह खबर टी वी और पेपर में आ रही थी...हम ठहरे वारकरी लोग... पैरों में पहिया लगा है.. घुमते घुमते यहाँ आये.. सोचा आप लोगों से मिलता जाऊँ...कंडक्टर ने.. हडताल होने के कारण उस कंडक्टर ने क्वान्याळ टीले पर ही उतार दिया...।

बापूसाब : अब कहाँ के अच्छे दिन.... मील लगाने को बैठे हैं... अब बताने के लिए नाम भी बचा नहीं है... अब कारखाने, कंपनी, सरकार सब गरिबों को निचोडने और उनका शोषण करने के लिए ही बैठे हैं..

वारकरी : आजकल ये सब बहुत ही बढ रहा है... बाकी सब कुशल मंगल है न जी.. ?

बापूसाब : हे भगवान, कहाँ का कुशल और कहाँ का मंगल... जीना ही मुश्किल हो गया है हमारा... खुशी से दलिया खाना भी नसीब नहीं है अब..(रुक्कव्वा आती है।)

रुक्कव्वा : जाओ पहले हाथ मूँह धो लो... फिर उसपर बात करते हैं...।

(लोटाभर पानी लेकर वारकरी बाहर जाता है.. हाथ पैर धोकर, मूँह धोकर आता है, रुक्कव्वा तौलिया देती है। वारकरी हाथपैर पोंछते हुए भरमू की और देखता है)

वारकरी : ये भरमू इत्तासा था... अब कारभारी हो गया है। कैसे हो बेटा... हमें छोडकर शादी कर ली..?

भरमू : हं.... अब मैं आपकी आँखों में चुभ रहा हूँ क्या?

वारकरी : ऐसी बात नहीं है रे.. कैसे हो ... बस यही पूछना था मुझे।

भरमू : ठीक हूँ। पर कारभारी नहीं हूँ...(उठकर जाने लगता है) चलता हूँ विठ्ठल मामा... घर आइए..।

वारकरी : जी.... भूल ही गया था.... कैसी है तेरी रानीसाहिबा... ?

भरमू : ठीक है...चलता हूँ। (जाने लगता है।)

(रुक्कव्वा मुंगफली और गुड लेकर आती है। साथ में पानी का गिलास भी है।)

वारकरी : आ जा, आ जा रे... हमारे संग तू भी गुड और मुंगफली खा ले ना... (हाथ से मना करते हुए भरमू चला जाता है।) बावला है लडका... अभी भी चीढ चीढ करने की आदत गयी नहीं है इसकी...।

बापूसाब : कुत्ते की पूँछ.... (थोडा रुककर) खैर.... तेरा कैसा चल रहा है... सब ठीक है ना... ?

(वारकरी मूंगफली और गुड खाकर हाथ पोंछता है। लंबी सांस छोडता है)

वारकरी : हमारे यहाँ अकाल पड़ा है... कवठेमहाकाळ की पूर्व दिशा का इलाका चिलचिलाती घूप से धूँ धूँ कर रहा है.. किसान आत्महत्या कर रहे हैं... एक औरत का अपने माथे का सिंदुर पोंछकर हाथ में मरे हुए पति की फोटो लेकर नज़र आना अब सामान्य सा हो गया है.... जवान बेटी की शादी की चिंता से वह सूखती जा रही है... हमारी ओर विदर्भ अमरावती, यवतमाळ, गोंदिया ... हर जगह नुकसान ही नुकसान है..।

बापुसाब : आपकी कहानी एक तो हमारी कहानी दूसरी...पर यातना एक समान...रूप स्वरूप अलग अलग बस....।

वारकरी : सबके लिए हम चीज बन गए हैं... एक वस्तु...बाजार की एक वस्तु...राजनीति के लिए प्यादे... अधिकारी लोग पैकेज लेकर चर्चा में आते है.. विरोधी पक्षवाले उसकी पूँजी बनाकर सत्ताधारी सरकार से लडते हैं।

बापुसाब : यहाँ भी कोई दूसरी परिस्थिति नहीं है...।

वारकरी : प्रधानमंत्री, मुख्यमंत्री का जो पैकेज कहते हो न वह आता है आता है कहने तक पता नहीं कहाँ गायब हो जाता है.. पता ही नहीं लगता।

बापुसाब : नारे लगाना और उसको अमल में लाना इसमें बहुत फर्क होता है।

वारकरी : ये वो बात नहीं....सूद पर पैसा देनेवाले मकान पर जब्ती लाते हैं...इतना ही नहीं चार लोगों में हमारी इज्जत भी उतार देते हैं... असल में यहाँ किसी को भी किसान के जान की परवाह नहीं है..... कर्जा, बीमारी एक ओर तो दूसरी ओर यह अकाल.. कहते है न..

जिह किसान उपजात है, फसल अनेक प्रकार ।
राम वही भुखमरी के, होते यहां शिकार।।
जो किसान सम्मान बन थे भारत की शान ।।
राम बने मजदूर है, छोड़ खेत खलिहान ।।

बापुसाब : सही है...।

वारकरी : जी... (थोडा रुककर) हमारे गाँव और वहाँ की खेती की ओर किसी ने प्रकृति की नजरों से देखा ही नहीं... सभी ने बस अपना ही फायदा देखा.. ।

बापुसाब : मुझे हैरानी हो रही है विट्ठल... तुने यह सब कहाँ से सीख लिया है रे... हैरान हूँ मैं...?

वारकरी : काका.. याद है आपको... हमारे यहाँ बहुत प्रबोधन परक व्याख्यान होते हैं...छोटे छोटे ग्रंथालयों में, परंपरा से आयी बातों पर चर्चा होती रहती है.. मजेदार बात यह कि समाज प्रबोधन के लिए ही हम वारी मृदंग, मंजिरे लेकर चलते है (थोडा रुककर).. अब अपनी सुनाओ... यहाँ बहुत बरसात हुई और बाढ आयी सुना....।

बापुसाब : देख, प्रकृति का कोप जैसे तैसे सहा जा सकता है... पर इन्सान से होनेवाली परेशानी सहन करना बहुत कठिन है... वो जो कंपनियाँ आ रही हैं न... उससे तो हम सारे बहुत परेशान है... हमारी जमीन पर कब्जा करना चाहते हैं.... उनको सरकार, राजनेता सब मिले हुए है... जमीन को ढेर सारा पैसा दे रहे हैं... किसान उनके लालच को बलि पड रहा है... अब मुझे भी नोटिस मिला है...।

वारकरी : अब यह तो हर तरफ का सर दर्द है।

बापूसाब : विट्ठल, इन्सान के पास अधिक पैसा और अति लालच नहीं होना चाहिए.. उससे उसकी मति मारी जाती है...(थोडा रुककर) अभी देखा नहीं क्या... तुम्हारे आने से पहले जो तमाशा हुआ वो..भरमू के कान में किसने क्या भर दिया है पता नहीं...खेती ही बेच देने को कह रहा है...पर मैं कैसे बेच सकता हूँ...खेतों के साथ मेरा रिश्ता ही अलग है .... खून का रिश्ता है मेरा उससे.. माँ पर ही संकट आया है... रात को आँख को आँख नहीं लगती...बुरे सपने आते हैं। (वारकरी गंभीर होता है।)

वारकरी : काका, गलत मत समझना.... सरकार ने अगर मान लिया तो....। (रुकता है)

बापूसाब : क्यों रुक गए... बोल ना..।

वारकरी : अपनी जमीन देना ही बेहतर....।

बापुसाब : (आश्चर्य... गुस्सा) अरे ये क्या कह रहा है तू....तुम सबका दिमाग घुम गया है.... आप सबका दिमाग ठिकाने पर नहीं है... गलती से उस भरमू के सामने बोलोगे तो.... पहले ही उसके दिमाग में खेत बेचने का भूत नाच रहा है.... (थोडा रुककर) वैसे तू अच्छी सलाह ही देता है...।

वारकरी : आपको तकलीफ पहुँचाने के लिए नहीं कहा था... माफ कीजिए... जो है सो बोला...(उनके पास जाकर... दोनों हाथ हाथ में लेकर...) चाचा, आपके मन में जैसा है वैसा ही हो... खेत आपके पास ही रहे... उस हरि से यही कहना है...।

हम तौ एक एक करि जाना।
दोइ कहैं तिनहीं कौं दोजग जिन नाहिंन पहिचांनां ।।
एकै पवन एक ही पानी एकै जोति समाना।
एकै खाक गढ़े सब भांडै एकै कोहरा सांना।।
जैसे बाढ़ी काष्ट ही काटै अगिनि न काटै कोई।
सब घटि अंतरि लूँही व्यापक धरै सरूपै सोई।।
माया देखि के जगत लुभांना काहे रे नर गरबांना
निरभै भया कछू नहिं ब्यापै कहै कबीर दिवांना।।
****